बाइबल का अधिकार

हमारा अध्ययन लगभग पूरा हो गया है। अब तक, हमारा ज़ोर बाइबल के परमेश्वर की प्रेरणा से होने पर रहा है, परन्तु परमेश्वर की प्रेरणा के तथ्य में बाइबल के अधिकार की बात का आधार है। इसलिए, इस अन्तिम पाठ में अधिकार पर ज़ोर दिया जाएगा।

''वचन का प्रचार कर''

रोम की मैमरटाइन जेल में मृत्यु की कतार से पौलुस के आदेश से गंभीर और कोई आदेश नहीं है। सुसमाचार में अपने प्रिय पुत्र तीमुथियुस को, जो सागर पार इफिसुस में रुका हुआ था, उसने आदेश दिया था। अपने आपको ''मुझ बूढ़े पौलुस को'' कहने के समय यह प्रेरित अपनी उम्र से पांच वर्ष अधिक अर्थात सतासठ वर्ष का बूढ़ा था (फिलेमोन 9)। बूढ़े आदमी के जैसे दिखने वाले इस व्यक्ति के शरीर पर यीशु के दाग थे (गलतियों 6:17)। ये दाग निश्चय ही उन पत्थरों के थे जो तीमुथियुस के शहर लुस्त्रा में उस पर पड़े थे, जिनसे यह जवान परिचित था (प्रेरितों 14:19; 2 तीमुथियुस 3:11)।

तीमुथियुस से मिलने की इस प्रेरित की इच्छा के कई कारण थे। अपने को मिले मृत्यु दण्ड के लिए अपील करने की कोई और सम्भावना नहीं थी।[1] मृत्यु के लिए बसन्त का समय निश्चित हो चुका था और पौलुस ने अपने सामने पड़ी सीलन भरी कोठरी में अन्तिम सर्दियां बितानी थीं। कैदियों को मित्रों से मिली सहायता पर निर्भर रहना पड़ता था (2 तीमुथियुस 1:16, 17) और पौलुस को उस बागे (यू.: *phailones*) की आवश्यकता थी जिसे वह त्रोआस में करपुस के यहां छोड़ आया था (2 तीमुथियुस 4:13)। इसलिए उसने तीमुथियुस को ''जाड़े से पहिले चले आने का प्रयत्न'' करने का अनुरोध किया था (2 तीमुथियुस 4:21)।

परन्तु, तीमुथियुस को बुलाने का उसका मुख्य उद्देश्य उस जवान के दिल में कोई बात और गहराई से डालना था। क्योंकि इस प्रेरित को यकीन नहीं था कि वह अपने विश्वसनीय संरक्षित व्यक्ति के साथ आमने-सामने मिल पाएगा या नहीं, इसलिए उसने उस सुसमाचार प्रचारक के मन में यह बिठाने के लिए एक पत्र लिखने का निर्णय लिया कि *वचन का प्रचार करें*।

पौलुस के लिए ''वचन का प्रचार कर'' (2 तीमुथियुस 4:2) लिखना ही बहुत गंभीर बात होगी। प्राणों के उद्धार के लिए बहुत दण्ड पाए हुए व्याकुल कैदी की ओर से उस जवान

को जिस पर वह बहुत निर्भर था कही गई बातों में इन तीन शब्दों ने बहुत गंभीरता डाल दी है। पौलुस ने इस आदेश को तीमुथियुस को ''परमेश्वर ... के साम्हने'' देने की बात कहकर और भी गंभीर बना दिया (1 तीमुथियुस 6:13)। फिर उसने जोड़ दिया कि मसीह अगम्य ज्योति में (यू.: *epiphaneia*) जीवितों व मृतकों का न्याय करके अपने राज्य का अन्तिम शाही कर्तव्य पूरा करेगा। निश्चय ही, ''वचन का प्रचार'' करने का महत्वपूर्ण आदेश देने से पहले इफिसुस के इस प्रचारक का ध्यान खींचने के लिए जो भी कहना आवश्यक था, वह पौलुस ने कहा दिया था।

''वचन'' का अर्थ

इफिसुस में यह आज्ञा (यू.: *keruxon ton logon*, जिसका अर्थ ''सूचना देना, संदेश की घोषणा करना, वचन का प्रचार करना'') मिलने और तीमुथियुस द्वारा पढ़े जाने पर उसके मन में क्या विचार आया होगा। *keruxon ton logon* शब्द पढ़कर तीमुथियुस का ध्यान किधर गया होगा? ''वचन'' क्या था और उसका प्रचार करना इतना आवश्यक क्यों है?

सृष्टि और इसके बने रहने का वचन?

वह वचन कितना शक्तिशाली था जिससे यह संसार अस्तित्व में आया: ''विश्वास ही से हम जान जाते हैं, कि सारी सृष्टि की रचना परमेश्वर के वचन के द्वारा हुई है। यह नहीं, कि जो कुछ देखने में आता है, वह देखी हुई वस्तुओं से बना हो'' (इब्रानियों 11:3)। यह परमेश्वर का सृजनात्मक वचन ही था जिसने जल से पृथ्वी को बनाया और आकाश की रचना की (2 पतरस 3:5)। ''आकाशमण्डल यहोवा के वचन से, और उसके सारे गण उसके मुंह की श्वास से बने। ... जब उसने कहा, तब हो गया; जब उसने आज्ञा दी, तब वास्तव में वैसा ही हो गया'' (भजन संहिता 33:6-9)।

परमेश्वर के मुख से निकली बात की सामर्थ जिससे सृष्टि का आरम्भ हुआ आज भी ''उसकी सामर्थ के वचन से'' सब वस्तुओं को सम्भालने में देखी जा सकती है (इब्रानियों 1:3)। ''आकाश और पृथ्वी उसी वचन के द्वारा'' (2 पतरस 3:7) न्याय के दिन तक जलाए जाने के लिए रखे गए हैं। यद्यपि सृष्टि की रचना और उसे सम्भाले रखने का उसका वचन सामर्थी है, परन्तु ऐसा कोई संकेत नहीं है कि पौलुस तीमुथियुस को आज्ञा देते समय परमेश्वर के वचन के उस पहलू पर चर्चा कर रहा था।

पुरखाओं को मिला वचन?

परमेश्वर का वचन आदम, कैन, नूह, इब्राहीम, और बहुत से दूसरे पुरखाओं के पास आया था (उत्पत्ति 2:16; 4:12; 6:14; 12:1)। तीमुथियुस यह सब जानता था (2 तीमुथियुस 3:15), परन्तु ऐसा कोई प्रमाण नहीं है कि तीमुथियुस को वचन का प्रचार करने के लिए लिखते समय पौलुस ने पुराने नियम की बात की हो।

इस्राएल को वचन?

सीनै पर्वत की चोटी से नीचे घाटी में लोगों की भीड़ परमेश्वर के वचन की गूंज से भयभीत हो गई थी (निर्गमन 20:1-19)। बाद में, परमेश्वर ने जो कुछ मौखिक रूप से कहा था उसे अपने हाथ से पत्थर की दो तख्तियों पर लिख दिया था (निर्गमन 31:18; 34:28, 29)। इसके अतिरिक्त उसने मूसा से और नियमों की पुस्तक लिखवाई (निर्गमन 24:4; इब्रानियों 9:19)। पत्थरों व पुस्तक दोनों में ही प्रभु का वचन था (निर्गमन 35:1)। मूसा जो कुछ पहाड़ से लाया था वह लहू से समर्पित इब्रानी लोगों के लिए अधिकार का मापदण्ड होना था। इसमें न तो कुछ जोड़ा जाना था और न ही इसमें से कुछ घटाया जाना था (व्यवस्थाविवरण 4:2)। मूसा की व्यवस्था जो कि प्रभु का वचन था, को तुच्छ जानने वाले की मृत्यु हो जानी थी (इब्रानियों 10:28)। उस लिखित व्यवस्था, जो कि मूसा के द्वारा दिया गया परमेश्वर का वचन था, को छोड़ किसी अन्य बात को बोलने वाला कोई भी व्यक्ति, परमेश्वर की सच्चाई के बिना बोलता था। परन्तु, ऐसा कोई संकेत नहीं है कि पौलुस ने तीमुथियुस को दी आज्ञा तथा व्यवस्था में प्रभु के वचन की बात की हो।

वचन एक व्यक्ति के रूप में?

इसी प्रकार, पौलुस की आज्ञा में यूहन्ना 1:1 के वचन अर्थात *लोगोस* का विशेष अर्थ नहीं मिलता: ''आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था।'' यूहन्ना 1:1 में पाया जाने वाला वचन कोई और नहीं बल्कि यीशु मसीह था, जो ''देहधारी हुआ; और ... हमारे बीच में डेरा किया'' (यूहन्ना 1:14)। यह सही है कि तीमुथियुस को मसीह का प्रचार करने के लिए कहा गया था (देखिए प्रेरितों 8:5), परन्तु 2 तीमुथियुस 4:2 में लिखा ''वचन'' शब्द मसीह की जानकारी या उसका संदेश लगता है जिसका प्रचार तीमुथियुस ने करना था। उसे ''वचन'' अर्थात यीशु बताने के लिए कहा गया था।

''वचन'' की बात

राज्य का वचन

मसीह के चेले होने के कारण, पौलुस और तीमुथियुस दोनों ने ही उस वचन की बात का प्रचार करना था जो यीशु ने किया था। मरकुस 2:2 में लिखा है कि यीशु ''वचन'' सुना रहा था। यीशु का संदेश ''राज्य का वचन'' था (मत्ती 13:19)। यीशु जानता था कि दानिय्येल ने भविष्यवाणी की थी कि परमेश्वर सदा तक रहने वाले एक राज्य की स्थापना करेगा (दानिय्येल 2:44); वह उस राज्य की स्थापना करने के लिए ही स्वर्ग को छोड़कर आया था। ''... मैंने इसलिए जन्म लिया, और इसलिए जगत में आया हूं'' (यूहन्ना 18:37)। उसने घोषणा की, ''समय पूरा हुआ है'' ''और परमेश्वर का राज्य निकट आ गया है'' (मरकुस 1:15)। इसलिए, वह तीन वर्ष तक फिरते हुए ''उनकी सभाओं में उपदेश करता और राज्य का सुसमाचार प्रचार करता'' रहा (मत्ती 4:23)। 29 ईस्वी में राज्य इतना

निकट था कि यीशु ने भविष्यवाणी की, ''... जो यहां खड़े हैं, उनमें से कोई कोई ऐसे हैं, कि जब तक परमेश्वर के राज्य को सामर्थ सहित आया हुआ न देख लें, तब तक मृत्यु का स्वाद कदापि न चखेंगे'' (मरकुस 9:1)।

वास्तव में, यीशु की व्यक्तिगत सेवकाई के तीन वर्षों के दौरान (27-30 ईस्वी) तैयारी के रूप में यीशु और यूहन्ना की शिक्षाओं के अनुसार डुबकी लेने वाले (मत्ती 3:1-6; यूहन्ना 4:1, 2) राज्य में प्रवेश कर रहे थे (देखिए लूका 16:16)। वे प्रभु के लिए तैयारी करते हुए (लूका 1:17) जल और आत्मा से नये सिरे से जन्म ले रहे थे (यूहन्ना 3:5)। परन्तु, वास्तविक अर्थ में जब तक यीशु को स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार नहीं मिला और वह सिंहासन पर बैठने के लिए स्वर्ग में नहीं उठाया गया तब तक वास्तव में राज्य की स्थापना नहीं हुई थी (मत्ती 28:18; प्रेरितों 2:29, 30)।

जिस राज्य का यीशु ने प्रचार किया था वह सबसे अलग था। यह जगत का नहीं बल्कि स्वर्ग का राज्य होना था (यूहन्ना 18:36; मत्ती 4:17): ''स्वर्ग का राज्य निकट है।'' इसकी शक्ति लोहे के हथियारों में नहीं बल्कि प्रेम की सामर्थ में थी (मत्ती 5:44) इसकी मनोस्थिति घमण्ड नहीं बल्कि दीनता थी (मत्ती 5:5)। इसका ज़ोर लेना नहीं बल्कि देना था (मत्ती 10:8)। इसने दृश्यमान या स्पर्शनीय नहीं, बल्कि मनुष्य के हृदयों में रहने वाला होना था (देखिए लूका 17:21; यूहन्ना 18:36)। इसके सिद्धांत दया, शांति और धार्मिकता थे (मत्ती 5:3-9)। सचमुच, यह राज्य जीवन के बाद स्वर्गीय राज्य का पूर्वस्वाद होना था।

यीशु के स्वर्गारोहण के बाद पहले पिन्तेकुस्त को राज्य के अस्तित्व में आने का वास्तविक समय बताया जाता है। उस दिन नवनिर्वाचित राजा का, जो अब स्वर्ग में है ''हर्षरूपी तेल से'' (इब्रानियों 1:9) उसके पिता ने अभिषेक किया था। राज्याभिषेक के बाद उसका पहला शाही कार्य अपने राजदूतों अर्थात अपने प्रेरितों को राजा के अधिकार से काम करने के लिए पवित्र आत्मा भेजना था (प्रेरितों 2:33; 2 कुरिन्थियों 5:20)। फिर उन राजदूतों ने पृथ्वी के छोर तक ऐलान करना था कि उस समय रोम में सांसारिक राजाओं के अतिरिक्त, एक और भी राजा अर्थात ''यीशु राजा है'' (प्रेरितों 17:7)। जहां भी पापियों ने महिमा प्राप्त मसीह का ''वचन'' (प्रेरितों 2:41) प्रसन्नता से ग्रहण किया, उन्हें डुबकी का बपतिस्मा दिया गया। ''वचन'' (याकूब 1:18; देखिए 1 पतरस 1:23, 24) के द्वारा उत्पन्न हुए हज़ारों लोगों को जल और आत्मा से जन्म लेने की बात को पूरा करने के लिए जल के कुण्डों में ले जाया गया (यूहन्ना 3:5)।

जब भी ''वचन'' का प्रचार हुआ, वह मसीह का ही प्रचार था (प्रेरितों 8:5), ''जो परमेश्वर के राज्य ... का सुसमाचार'' था (प्रेरितों 8:12)। डुबकी का बपतिस्मा लेने के समय, पापियों को अंधकार के राज्य में से परमेश्वर के प्रिय पुत्र के राज्य में बदल दिया जाता था (कुलुस्सियों 1:13)। पृथ्वी पर राज्य में विश्वास से सेवा इसके नागरिकों को आश्वस्त करेगी कि बहुत क्लेश सहने के बाद उन्हें उत्तम संसार में ''परमेश्वर के राज्य में प्रवेश'' मिलेगा (प्रेरितों 14:22)। इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि तीमुथियुस को आज्ञा देते समय पौलुस के मन में वह ''वचन'' था जिसका प्रचार यीशु ने ''राज्य का वचन'' (मत्ती 13:19)

के रूप में किया था। उस राज्य से जुड़ी हुई हर बात तीमुथियुस के प्रचार में शामिल होनी थी।

नये नियम की पुस्तकें

राजा के भेजे हुए पवित्र आत्मा ने मत्ती, मरकुस और पतरस जैसे प्रेरितों को सारी सच्चाई में अगुआई दी थी (यूहन्ना 16:13)। आत्मा ने मरकुस, लूका, याकूब और यहूदा जैसे भविष्यवक्ताओं को (प्रेरितों 13:1, 2) और पौलुस के प्रत्येक शब्द बोलने (1 कुरिन्थियों 2:3) और कम से कम बारह पुस्तकें लिखने (1 कुरिन्थियों 14:37) में भी अगुआई दी। यदि ये सब (यूहन्ना के लेखों के अपवाद से) तीमुथियुस को पौलुस से आज्ञा मिलने के समय तक पूरा हो गया था, तो तब तक काफी ''वचन'' लिखित रूप में मिल चुका था जिससे यह जवान प्रचारक प्रचार कर सकता था। व्यावहारिक रूप से, लगभग 96 ईस्वी से, ''वचन'' नये नियम के रूप में उपलब्ध है जिससे सुसमाचार के सेवक अपने प्रचार की सामग्री ले सकते हैं।

परमेश्वर के उस आदमी में सही व्यवहार दिखाई देता है जो प्रकाशितवाक्य की पुस्तक (प्रकाशितवाक्य 22:18, 19) या सताइस पुस्तकों में से किसी में भी जोड़ने या घटाने से डरता है। उसने मसीह की शिक्षा से आगे न जाने का निश्चय किया हुआ है (2 यूहन्ना 9-11)। ''मसीह की शिक्षा'' की व्याख्या मसीह के ईश्वरीय होने से सम्बन्धित शिक्षा देने वाले को उन पुस्तकों में से शिक्षा देने की ही अनुमति है। यह इसलिए सत्य है क्योंकि मसीह के ईश्वरीय होने में उसका अधिकार शामिल है (मत्ती 28:18; 1 पतरस 3:22), और उसने बांधने और खोलने का अपना अधिकार अपने प्रेरितों को दिया (मत्ती 16:19)। प्रेरितों ने नये नियम की प्रत्येक पुस्तक या तो लिखी या लिखवाई। उनका बांधने और खोलने का अधिकार उन पुस्तकों में ही है, बाहर नहीं। प्रेरितों की शिक्षा को नकारना (प्रेरितों 2:42) मसीह को नकारना है (लूका 10:16; देखिए 1 यूहन्ना 4:6)। उनका वचन परमेश्वर का वचन बन गया, और उसका वचन न्याय का वचन है (यूहन्ना 12:48)।[2]

इससे पता चलता है कि न्याय के दिन जिन पुस्तकों में से हमारी आत्माओं का न्याय होगा, वे बाइबल की पुस्तकें ही हैं (देखिए प्रकाशितवाक्य 20:12)। उन पुस्तकों के बाहर मृतकों का न्याय उनके कामों के अनुसार होगा। आकाश और पृथ्वी टल जाएंगे, परन्तु बाइबल की पुस्तकें कभी न टलेंगी (मत्ती 24:35)। आज ''उसके अनुग्रह के वचन'' (प्रेरितों 20:32) में राज्य के नागरिकों को बनाने और सुधारने और उन अलग किए हुओं में मीरास देने के लिए ईश्वरीय प्रेरणा से सताइस दस्तावेज़ों से न कम न अधिक दिए गए हैं (प्रेरितों 20:32)।

वचन के प्रचार में शामिल विषय

सभी सताइस पुस्तकें ''परमेश्वर की प्रेरणा'' (2 तीमुथियुस 3:16) से होने के गुणों को पूरा करती हैं, इसलिए उनमें दिया गया प्रत्येक विषय उपदेश, समझाने, सुधारने और धर्म की शिक्षा देने के लिए लाभदायक है, ताकि परमेश्वर का जन्म सिद्ध बने और हर एक

भले काम के लिए पूरी तरह से तैयार हो जाए। क्या ही धन्य है वह प्रचारक, जो अपनी सेवकाई के अन्त में शुद्ध विवेक से कह सके कि उसने जो भी लाभ का था, उसे अपने तक नहीं रखा। विश्वासी प्रचारक परमेश्वर की सारी मंशा का प्रचार करता है, इसलिए वह सब लोगों के लहू से आज़ाद है (प्रेरितों 20:20-27)।

बाइबल की प्रेरणा

जैसे कि सारे अध्ययन में ज़ोर दिया गया है, बाइबल में शामिल विषयों और वचन के प्रचार में से आज जिस पर बहुत ज़ोर देने की आवश्यकता है वह है बाइबल का परमेश्वर की प्रेरणा से होना। यदि इसकी प्रेरणा विलियम शेक्सपीयर के नाटक या जॉन मिल्टन के गद्य या एल्फ्रेड टेनिसन की कविताओं की प्रेरणा से बढ़कर नहीं है, तो बाइबल पूरी तरह से एक सांसारिक पुस्तक है इसलिए इसका प्रचार अधिकार के साथ नहीं किया जा सकता। क्योंकि ''मनुष्य का मार्ग उसके वश में नहीं है'' (यिर्मयाह 10:23), इसलिए मनुष्य की ओर से निकली बाइबल ने तो मनुष्य जाति को बिल्कुल ही निराशा में रखना था। बाइबल ''[मनुष्य के] पांव के लिए दीपक, और [उसके] मार्ग के लिए उजियाला है'' (भजन संहिता 119:105)। यदि यह पूरी तरह से मनुष्य का दिया हुआ उजियाला होता, तो लोगों को एक भरोसे योग्य गाइड मानकर पुराने और नये नियम की छियासठ पुस्तकों को मानना पड़ता।

यद्यपि इन पुस्तकों को अस्तित्व में लाने के लिए चालीस के लगभग मानवीय लेखकों ने सहायता की, परन्तु इन लेखकों के कार्य का निरीक्षण करने के अलावा आत्मा उनसे लिखवाता भी था (2 पतरस 1:21)। कुछ लोग अंग्रेज़ी के किंग जेम्स वर्ज़न के 2 पतरस 1:20 (... no prophecy of Scripture is a matter of one's own interpretation) की व्याख्या यह अर्थ निकालने के लिए करते हैं कि किसी को किसी आयत का अर्थ अपनी मर्ज़ी से नहीं निकालना चाहिए। ऐसा सिखाकर वे वही काम कर रहे होते हैं, जो वे कहते हैं कि नहीं करना चाहिए। सच तो यह है कि हर शिक्षक जो भी सिखा रहा होता है वह स्वयं ही अपनी व्यवस्था अपनी मर्ज़ी से करता है, और उसे ऐसा ही करना चाहिए।

एज्रा और उसके सहशिक्षकों ने ''क्या स्त्री, क्या पुरुष, जितने सुनकर समझ सकते थे'' (नहेमायाह 8:2) सबके सामने बाइबल पढ़ी; ''और उन्होंने परमेश्वर की व्यवस्था की पुस्तक से पढ़कर अर्थ समझा दिया; और लोगों ने पाठ को समझ लिया''(नहेमायाह 8:8)। शिक्षक व्याख्या करने के अपने दायित्व से बच नहीं सकते हैं। उन्हें चाहिए कि वे सही व्याख्या करने की चिन्ता करें, कि कहीं ऐसा न हो कि वे ''अपने'' और दूसरों के नाश के लिए बाइबल को तोड़ते-मरोड़ते रहें (2 पतरस 3:16)। बहुत से लोग हैं, जो किसी गुट के लिए ''चतुराई से ... परमेश्वर के वचन में मिलावट करते हैं'' (2 कुरिन्थियों 4:2)। पौलुस ने कहा था, ''हम उन बहुतों के समान नहीं, जो परमेश्वर के वचन में मिलावट करते हैं'' (2 कुरिन्थियों 2:17)। रोमन कैथलिक लोग भी 2 पतरस 1:20 का यह कहकर दुरुपयोग करते हैं कि यह आयत ''स्पष्ट दिखाती है कि बाइबल की व्याख्या किसी के अपने निर्णय से

नहीं होती।''[3] उनके आदेश के अनुसार, केवल रोमन कैथलिक चर्च को ही आधिकारिक व्याख्या की अनुमति प्राप्त है।

पौलुस वास्तव में क्या कह रहा था? वह बाइबल की आयतों के अर्थों को जांचने की बात नहीं कह रहा था, बल्कि वह तो यह कह रहा था कि बाइबल हमें कैसे मिली। बाइबल लिखने वालों के विचार अपना (जानकारी को उसकी अपनी व्यक्तिगत [यू.: *epilusis*]) ज्ञान नहीं था। पवित्र शास्त्र की कोई भी बात कभी किसी लेखक की इच्छा से नहीं आई; बल्कि, उसे लिखने के लिए लोगों को पवित्र आत्मा की ओर से सिखाया जाता था। इसलिए, बाइबल के परमेश्वर की प्रेरणा से होने का पतरस का विचार किसी मानवीय स्रोत से होने के विपरीत है। पतरस ने बाइबल को एक अलग दर्जा दे दिया। यह केवल एक पुस्तक न होकर; पुस्तकों की पुस्तक है।

जब बाइबल को इस प्रकार से समझा जाए केवल तभी इसकी सही जगह मिलती है और यह मनुष्यों के हृदयों में अपने यत्न का ज़ोर लगाती है। पौलुस की घोषणा कि पवित्र बाइबल का ''हर एक पवित्र शास्त्र'' परमेश्वर के श्वास (यू.: *theopneustos*) से है, एक और अत्यन्त महत्वपूर्ण आयत है। मनुष्य के लेख मनुष्य के श्वास (यू.: *anthropneustos*) से होते हैं। वास्तव में यह अनुवाद कि पवित्र शास्त्र ''प्रेरणा से'' है कुछ ऐसा छोड़ देता है जिसकी इच्छा होती है। ''प्रेरणा से'' शब्द लातीनी भाषा से लिया गया है, जिसका अर्थ है ''सांस से।'' परमेश्वर ने मृत पुस्तकों के एक समूह में सांस नहीं डाला, बल्कि ये पुस्तकें परमेश्वर के सांस से जीवित हो गईं क्योंकि वे परमेश्वर के सांस से हैं। तुलना के लिए, मृत मिट्टी की एक देह में परमेश्वर ने अपना सांस फूंका था, और आदम जीवित प्राणी हो गया था। बल्कि, परमेश्वर के सांस अर्थात पवित्र आत्मा से इन पुस्तकों को अस्तित्व में लाया गया फिर उन्हें जीवित और सामर्थी किया गया। फिर, यह कहना कि बाइबल परमेश्वर की ''प्रेरणा से'' है 2 तीमुथियुस 3:16 में *theopneustos* का बिल्कुल पूर्ण रीति से सही अनुवाद नहीं है।

एक ऊंचे जहाज़ पर, बाइबल की प्रेरणा (उस अपर्याप्त शब्द का इस्तेमाल करने पर) का अर्थ परमेश्वर की सांस है। अपने सुनने वालों के मनों में परमेश्वर की प्रेरणा से लिखी गई पुस्तक का विचार डालकर सुसमाचार के प्रचारक पवित्र सेवा करते हैं। बाइबल का एक लेखक कहता है, ''यहोवा का आत्मा मुझ में होकर बोला, और उसी का वचन मेरे मुंह से आया'' (2 शमूएल 23:2)।

एक व्यक्तिगत परमेश्वर

वचन के प्रत्येक सेवक को जिन महान विषयों पर बात करने का अवसर मिलता है उनमें से एक और विषय व्यक्तिगत परमेश्वर की शिक्षा पर चर्चा है। इस सृष्टि के पीछे न केवल एक शक्तिशाली सृजनात्मक शक्ति है, बल्कि वह शक्ति एक व्यक्ति के रूप में वास करती है। ''जिसने कान दिया, क्या वह आप नहीं सुनता? जिसने आंख रची, क्या वह आप नहीं देखता?'' (भजन संहिता 94:9)। जिसने मनुष्य का व्यक्तित्व बनाया वह ईश्वरीय

व्यक्ति से कम नहीं हो सकता। वह सोचता है (यशायाह 55:8); वह जानता है (निर्गमन 3:7); वह याद रखता है (निर्गमन 6:5); वह प्रेम करता है (यूहन्ना 3:16); वह क्रोधित हो सकता है (भजन 103:8)। यद्यपि उसमें ये मानवीय विशेषताएं हैं, फिर भी वह मांस और हड्डियां नहीं है (लूका 24:39)। वह आत्मा है (यूहन्ना 4:24) और मृत्यु के वश में नहीं है (1 तीमुथियुस 1:17; 6:16)। जीवन से प्रेम करने वाला और कब्रिस्तान में जाकर खत्म न होने का इच्छुक आनन्दित होता है कि उसका सृष्टिकर्त्ता (सभोपदेशक 12:1) उसका अनन्त उद्धारकर्त्ता होने की सामर्थ रखता है (1 तीमुथियुस 1:1)। मनुष्य को अपने मन की गहराइयों से गाना चाहिए: ''पवित्र, पवित्र, पवित्र प्रभु, परमेश्वर, सर्वशक्तिमान, जो था, और जो है, और जो आनेवाला है'' (प्रकाशितवाक्य 4:8)। वचन के प्रचारक के पास अपने सुनने वालों को उनके स्वर्गीय पिता से परिचित करवाने, और सदा उसके साथ रहने के लिए तैयार होने को बताने के लिए बहुत कुछ है।

परमेश्वर का पुत्र

तीमुथियुस के पास पौलुस की आज्ञा लेकर जाने वालों द्वारा तैयार किए गए विषयों में से एक महत्वपूर्ण विषय लोगों को उसका दर्शन कराना है जो मनुष्य के पुत्रों में परम सुन्दर है, और जिसके होंठों से अनुग्रह छलकता है (भजन 45:2)। यह वही व्यक्ति है जिससे पिता बहुत प्रसन्न है और उससे प्रेम करता है (मत्ती 3:17)। यीशु के ईश्वरीय होने का प्रमाण पहले पुराने नियम की भविष्यवाणियों का उसमें पूरा होने से मिलता है (प्रेरितों 17:2, 3) जो उसके जन्म से सैकड़ों वर्ष पहले लिखी गई थीं।[4] उसके अनुपम उपदेश जिनसे दो हज़ार वर्ष पूर्व उसके श्रोता स्तब्ध रह गए थे (मत्ती 13:54) और उनके जैसा उपदेश अभी तक कोई नहीं दे पाया है। उसका निस्वार्थपन; उसका आत्म-त्याग; उसका कोमल हृदय; महिलाओं, बच्चों, पापियों और बाहर के लोगों के लिए उसकी सोच और दूसरे बहुत से गुण व्यक्ति को यीशु को ''बहुमूल्य पत्थर'' (1 पतरस 2:6, 7) के रूप में मानने के लिए बाध्य करते हैं। जितना उस विनम्र नासरी का प्रचार किया जाता है, लोग कह उठते हैं, ''यीशु है कैसा दोस्त प्यारा ...!''

उद्धार की योजना

बाइबल के आत्मा की प्रेरणा, परमेश्वर में विश्वास, यीशु के ईश्वरीय होने की नींवें कितनी भी मजबूत क्यों न हों, एक प्रचारक जब तक सुसमाचार की उद्धार की योजना का प्रचार नहीं करता तब तक वह अपना समय यूं ही व्यर्थ गंवा रहा होता है। किसी को बाइबल के परमेश्वर की प्रेरणा से होने, एक व्यक्तिगत परमेश्वर के बारे में और परमेश्वर-मनुष्य यीशु के विषय में जानकर तब तक कुछ लाभ नहीं मिलेगा जब तक उसे यह पता न चले कि उसे अपने पापों से उद्धार पाने के लिए क्या करना है। यीशु संसार में मनुष्यों को बचाने के लिए आया (लूका 19:10; 1 तीमुथियुस 1:15), परन्तु वह किसी का उद्धार बिना शर्त के नहीं करेगा (लूका 6:46)। बहुत से लोगों का नाश होगा (मत्ती 7:13, 14) इसलिए

आत्माओं से प्रेम करने वाला प्रचारक पापियों को यह दिखाने के लिए हमेशा चौकस रहेगा कि उन्हें उद्धार पाने के लिए क्या करना चाहिए।

कई लोग उद्धार की योजना की पांच बातों की रूपरेखा को कर्मकाण्डवाद कहकर उसकी आलोचना करते हैं, परन्तु वे आत्माओं के उद्धार में सहायता नहीं कर रहे हैं। यह सत्य है कि कुछ लोग केवल अपने होंठों से ही अंगीकार करते हैं, और कई लोग बपतिस्मे में डूबकर केवल गीले ही होते हैं। परन्तु, यह तथ्य तो रह जाता है कि परमेश्वर अपनी स्वीकृति के लिए आज्ञाकारिता की पांच बातों की मनुष्य के सामने शर्त रखता है। कुछ लोग यह कहकर कि उद्धार की योजना केवल यीशु ही है, इस वाक्यांश का गलत इस्तेमाल कर रहे हैं। मार्ग यीशु ही है, इसलिए परमेश्वर की योजना में वही मुख्य नायक था (यूहन्ना 14:6); परन्तु यीशु अकेला किसी का भी उद्धार नहीं करेगा। उद्धार की योजना में स्पष्ट बताया गया है कि आज्ञा मानने वालों के लिए जीवन और आज्ञा न मानने वालों के लिए परमेश्वर का क्रोध है (यूहन्ना 3:36)। वह केवल आज्ञा मानने वालों का ही उद्धार करेगा (इब्रानियों 5:9) और आज्ञा मानना एक-एक करके पूरा करने वाली प्रक्रिया है।

पहला पग प्रचार किए गए वचन को सुनने की इच्छा है, क्योंकि कई लोगों को ऊंचा सुनता है (मत्ती 13:15) और उनका कभी उद्धार नहीं होगा। ''जिसके कान हों वह सुन ले'' (मत्ती 13:9)। अपने कान बन्द कर लेने वालों को यीशु की सामर्थ भी नहीं बचाएगी (प्रेरितों 7:57)।

दूसरा कदम यीशु के संदेश में मन से विश्वास करना अर्थात सच्चे मन से यह विश्वास करना है कि वह ''परमेश्वर हमारे साथ,'' अर्थात इम्मानुएल अर्थात ऐसा मित्र है जो एक भाई से भी अधिक हमारे निकट होगा (प्रेरितों 16:31; यूहन्ना 20:30, 31)। ''केवल विश्वास'' ने कभी किसी का उद्धार नहीं किया चाहे वह मसीही हो (याकूब 2:24) या कोई गैर मसीही (यूहन्ना 12:42)। दूसरा कदम अनिवार्य है (यूहन्ना 8:24), परन्तु अकेला विश्वास अविश्वास से भी बुरा है।

तीसरा कदम मन की बात को होंठों से मान लेना है: ''मैं विश्वास करता हूं कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है'' (प्रेरितों 8:37; देखिए 1 यूहन्ना 4:15; मत्ती 16:16)। यीशु ने प्रतिज्ञा की है कि किसी पापी द्वारा ''अच्छा अंगीकार'' (1 तीमुथियुस 6:13) करने पर वह उस पापी के नाम का अपने पिता के सामने अंगीकार करेगा (मत्ती 10:32)। सच्चे विश्वासी अपने मुंह से प्रभु यीशु का अंगीकार करने में (रोमियों 10:9, 10) न तो लज्जित होते हैं (मरकुस 8:38) न डरते हैं (यूहन्ना 12:42)।

चौथा कदम मन को बदलना है, जो एक क्रिया है जिसे सामान्यत: मन फिराना कहा जाता है। यह यीशु में किसी के नये विश्वास के कारण, उसकी सोच में आया विपरीत बदलाव है। वह पिछली वफ़ादारियों (चाहे वे धन, मूर्तियों या किसी धार्मिक नेता के प्रति हों) का त्याग करके यीशु को अपने जीवन का प्रभु बनाने का निश्चय करता है। ईश्वरीय शोक से पहले मन फिराव होता है (2 कुरिन्थियों 7:10); यह असली स्वामी को अपना आप दे देने के बाद मन का बदलना (यू.: *metanoia*) है (मत्ती 3:8)। बाइबल में यह

सबसे कठिन आज्ञा है।[5] इसके उद्धार की योजना से अलग कदम होने का इस तथ्य से स्पष्ट पता चलता है कि पश्चात्ताप के बिना भी विश्वास किया जा सकता है (याकूब 2:18-20)। दुष्टात्मा विश्वास तो करते हैं, परन्तु वे अपना मन या आचरण नहीं बदलते अर्थात वे मन नहीं फिराते। मन फिराने के लिए अंग्रेज़ी शब्द ''repent'' (लातीनी *repoenitere* अर्थात ''शोकित होना'' से निकला) पवित्र आत्मा द्वारा प्रयुक्त शब्द (यू.: *metanoeson* अर्थात ''मन बदलना, मानसिक दिशाओं को उल्टा करना'') का अच्छा अनुवाद नहीं है। सच्चे पश्चात्ताप अर्थात *metanoia* के लिए आज्ञापालन करने के शोक से कुछ अधिक की आवश्यकता होती है।

पांचवां कदम पानी में डुबकी लगाना है (प्रेरितों 10:47, 48)। बपतिस्मे का अपने आप में कोई महत्व नहीं है, इसका अर्थ शरीर से मैल उतारना भी नहीं है (1 पतरस 3:21)। परन्तु, परमेश्वर की योजना में, इसका अत्यधिक महत्व है। यह मसीह में और मसीह से बाहर होने (गलतियों 3:27) अर्थात मसीह की देह में या देह से बाहर होने में अन्तर करता है (1 कुरिन्थियों 12:13)। बिना बपतिस्मे के पापों की क्षमा नहीं है (प्रेरितों 2:38), परन्तु, इस आज्ञा को मानने से आत्मा शुद्ध हो जाती है (1 पतरस 1:22)। डुबकी लिए बिना, नया जन्म पूर्ण नहीं होता (यूहन्ना 3:5)। नये जन्म का यह स्नान (तीतुस 3:5) मन से होना चाहिए (रोमियों 6:17); वरना यह कपटपूर्ण आडम्बर है और केवल डुबोया जाना ही है। यह संसार और कलीसिया के बीच विभाजक रेखा है। यह अंधकार की शक्ति से निकलकर परमेश्वर के प्रिय पुत्र के राज्य में जाना है (कुलुस्सियों 1:13)। बपतिस्मा इतना महत्वपूर्ण है कि प्रेरितों के काम में कोई भी उदाहरण किसी को भी जिसने मसीह में विश्वास किया हो खाने या पीने के लिए तब तक समय नहीं निकाला जब तक उसने डुबकी अर्थात बपतिस्मा न ले लिया। बपतिस्मा किसी के विश्वासी बनने पर उसी समय किया जाता था चाहे वह आधी रात ही क्यों न हो (प्रेरितों 16:33)। बपतिस्मा मसीहियों को नहीं, बल्कि पापियों को दिया जाता था। बपतिस्मा देने से लोग मसीही बनते हैं।

उद्धार की योजना में पापियों के लिए दिए गए पांच कार्य उनके अच्छे कामों के कारण नहीं हैं। इससे कोई उद्धार को कमाता नहीं है। केवल प्रभु का लहू ही है जो पापों को धो डालता है (प्रकाशितवाक्य 1:5; 5:9, 10), परन्तु वह लहू किसी को तब तक नहीं धोता जब तक वह आज्ञा मानने के पांच कार्यों को पूरा नहीं करता है (प्रेरितों 22:16)। एक-एक बात पूरा करने की उद्धार की योजना को तुच्छ जानने वाले या इन पांच बातों में से किसी एक को छोड़ देने वाले प्रचारक परमेश्वर की सारी मंशा का प्रचार नहीं कर रहे हैं बल्कि वे लोगों को गुमराह कर रहे हैं।

कलीसिया

लगभग 62 ईस्वी में पौलुस ने इफिसुस की कलीसिया के नाम एक पत्र लिखा था। उस पत्र को बड़े सम्मान से सम्भालकर रखा गया होगा। निश्चय ही इसे किसी कलीसिया के पुस्तकालय में रखा गया होगा और वहां स्थानीय प्रचारक बनने के लिए लगभग 63 ईस्वी में

आए तीमुथियुस के अध्ययन के लिए पड़ा था। उस पत्र को पढ़ने वाले किसी भी व्यक्ति ने यह निष्कर्ष निकालना था, कि परमेश्वर की दृष्टि में कलीसिया का बहुत महत्व है। पौलुस के शब्दों में कलीसिया को एक ऐसी संस्था के रूप में दिखाया गया है जिसकी योजना मसीह की पत्नी बनने के लिए (इफिसियों 5:25, 26) अनन्तकाल से बनाई गई थी (इफिसियों 3:11)। पत्र का अध्ययन करने और वचन का प्रचार करने की ताड़ना पाकर, तीमुथियुस जैसे प्रचारकों को मसीह की कलीसिया को महिमा देने के विचारों के साथ अभिभूत हो जाना था। वचन का प्रचार करने वाला कोई भी व्यक्ति कलीसिया के महत्व को कम नहीं कर सकता है।

मसीह अपनी कलीसिया को बचाने के लिए वापस आ रहा है (इफिसियों 5:23), इसलिए लोगों से प्रेम करने वाला प्रचारक अपनी पूरी शक्ति से उन्हें कलीसिया में जीवन व्यतीत करने और मरने के लिए प्रेरित करेगा। यह सही है, कि कलीसिया अपने आप में किसी को बचा नहीं सकती। बचाने वाला यीशु है और कलीसिया उद्धार पाए हुए लोगों से ही बनती है। दिन-ब-दिन हर पापी जो उद्धार की योजना की पांच बातें पूरा करता है उद्धार पाया हुआ व्यक्ति बन जाता है और प्रभु उसे ऐसा ही करने वाले अन्य लोगों के इस समूह अर्थात कलीसिया में मिला लेता है (प्रेरितों 2:47)। एक दिन प्रभु के लौटने पर विश्वास में बने और स्थिर रहने वाले, सुसमाचार की आशा से न हिलने वालों को स्वर्ग में ले लिया जाएगा (कुलुस्सियों 1:23)।

नये नियम में, उद्धार पाए हुए लोगों को मसीह का झुण्ड (यूहन्ना 10:16), मसीह की देह (कुलुस्सियों 1:13), मसीह का राज्य (कुलुस्सियों 1:18) और परमेश्वर का परिवार (गलतियों 3:26; रोमियों 8:29) कहा गया है। बाइबल की भाषा में कहें, तो वास्तविक कलीसियाओं की संख्या (मण्डलियों की नहीं) का अर्थ संसार भर में पाए जाने वाले ''मसीह के झुण्ड'' और ''मसीह की देहें'' और ''मसीह के राज्य'' और ''परमेश्वर के परिवार'' है। प्रभु की कलीसिया के बहुत से सदस्य तो कई देशों में फैले हुए हैं, परन्तु देह केवल *एक* ही है (देखिए 1 कुरिन्थियों 12:20)।

नये नियम की कलीसिया बिना नाम के एक संस्था है। अंग्रेज़ी बाइबल में ''church'' या ''churches'' शब्द का 112 बार में से, पचानवे बार ''the church'' या ''churches'' ही इस्तेमाल हुआ है। बारह बार इसे ''the church of God'' अर्थात परमेश्वर की कलीसिया कहा गया है जो कि उसके स्वामित्व को दिखाता है। एक बार इससे मिलता-जुलता वाक्यांश ''Christ's churches'' अर्थात मसीह की कलीसियाएं मिलता है (रोमियों 16:16)। एक बार यीशु ने इसे ''अपनी कलीसिया'' (मत्ती 16:18) कहा था। अलग-अलग लोगों द्वारा इसकी सदस्यता लेने के विवरण (अन्यजाति, पवित्र लोग, पहलौठे) इस शब्द के तीन अन्य नामों के बारे में बताते हैं (रोमियों 16:4; 1 कुरिन्थियों 14:33; इब्रानियों 12:23)। कलीसिया को कोई नाम नहीं दिया गया है। नाम देने से, लोग इसे बांट देते हैं। व्यक्तिगत सदस्यों को मसीह का नाम (1 पतरस 4:16) अर्थात ''मसीही'' नाम मिला है, परन्तु नये नियम के लेखकों ने कभी भी उसकी कलीसिया को मसीही कलीसिया

का नाम नहीं दिया। यदि कोई बोले, तो ऐसा बोले मानो परमेश्वर का वचन है (1 पतरस 4:11)। ''मसीह की कलीसिया की कलीसियाएं,'' ''मसीह की कलीसिया की मण्डलियां,'' ''मसीह की कलीसिया के प्रचारक,'' या ''मैं मसीह की कलीसिया का हूं'' नहीं करना चाहिए। परमेश्वर करे कि हम ''शुद्ध भाषा'' बोलने का प्रयास करें ताकि ''कंधे से कंधा मिलाए हुए उसकी सेवा'' कर सकें (सपन्याह 3:9)।

आराधना

ध्यान देना चाहिए। उसे पता होना चाहिए कि आराधना चार प्रकार की होती है: अज्ञानता में आराधना, व्यर्थ उपासना, मन के अनुसार उपासना, और सच्ची आराधना। आकृतियों और मूर्तियों की पूजा करने वाला (प्रेरितों 17:22, 23; 1 कुरिन्थियों 8:5, 6) अज्ञानता में आराधना कर रहा है। सच्चे परमेश्वर की आराधना करने वाला भी व्यर्थ में आराधना कर रहा हो सकता है (मत्ती 15:9)। यीशु ने मनुष्यों की शिक्षाओं तथा आज्ञाओं को मानने को व्यर्थ उपासना कहा है। लोग हाथ धोकर, पांव धोकर, अंगुलियों को पवित्र जल के बर्तन में डुबोकर और क्रूस का चिह्न बनाकर, मरियम और यीशु की मूर्ति के सामने झुककर, धूप जलाकर, साज़ बजाकर, नाचकर और गांजा पीकर व्यर्थ उपासना करते हैं। मन के अनुसार आराधना करना, किसी विशेष प्रकार के भोजन न करने का दृढ़ संकल्प या अपने शरीर को कष्ट देकर अनुशासित करना है, परन्तु प्रभु इस प्रकार की आराधना नहीं चाहता है (कुलुस्सियों 2:20-22)। सच्ची आराधना में दो बातें हैं: यह सच्चाई की आत्मा से और सच्चाई से होती है (यूहन्ना 4:24)।

सच्चाई से आराधना करने का अर्थ वचन के अनुसार आराधना करना है (यूहन्ना 17:17)। वचन में आराधना के केवल पांच कार्य निर्धारित किए गए हैं (प्रेरितों 2:42; इफिसियों 5:19)। ये कार्य हैं, वचन पढ़ना (कुलुस्सियों 4:16), चंदा देना (2 कुरिन्थियों 9:7), रोटी तोड़ना (1 कुरिन्थियों 11:23-26), प्रार्थना करना (1 तीमुथियुस 2:1) और गीत गाना (इफिसियों 5:19; इब्रानियों 13:15)। जब सच्चाई की परिभाषा ''सच्चाई के वचन में पाई जाने वाली बातों'' के बजाय ''निष्कपटता'' के रूप में की जाती है, तो मनुष्य की कोई भी शिक्षा स्वीकार्य हो जाती है! परमेश्वर की सच्ची शिक्षाओं को न जानने वाला निष्कपटता से किसी भी शिक्षा को मान सकता है। मनुष्य की शिक्षाएं व्यर्थ में की हुई आराधना हैं (मत्ती 15:9), इसलिए यूहन्ना 4:24 में ''सच्चाई'' शब्द को केवल उस तक सीमित रखा जाना चाहिए जो सच्चाई के वचन में लिखा मिलता है (यूहन्ना 17:17)।

सच्चाई से की गई आराधना केवल मुंह से बड़ाई करने की मनाही करती है (मत्ती 15:8), चाहे वह पवित्र शास्त्र को पढ़ना हो, प्रार्थना करना हो या गीत गाना हो (1 कुरिन्थियों 14:15)। प्रभु भोज के समय प्रभु की देह को न पहचानने वाला सच्चे मन से आराधना करने वाला नहीं हो सकता; इसके विपरीत वह अपने आप पर दण्ड खा और पी रहा है (1 कुरिन्थियों 11:27-29)। धन के रूप में दी गई कोई भी भेंट यदि मन से नहीं दी गई तो उसका लाभ उसे उतना ही होगा जितना जेब में पड़े-पड़े हो सकता था (2 कुरिन्थियों 9:7) अर्थात वह सच्चे

मन से आराधना नहीं कर रहा।

पौलुस की बात सच्चे मन से मानने वाला, परमेश्वर का प्रचारक लोगों को स्पष्ट समझा देगा कि उस एक सच्चे परमेश्वर को छोड़ किसी की भी आराधना और उसकी इच्छा के बिना की गई आराधना भी अस्वीकार्य है। सही और गलत आराधना का निर्णय परमेश्वर स्वयं करेगा।

परिवार

''परमेश्वर के योग्य संतान'' (मलाकी 2:15) की इच्छा के कारण ही पवित्र पिता ने आदम के लिए एक पत्नी और हव्वा के लिए एक पति की इच्छा की थी। परमेश्वर तलाक को पसन्द नहीं करता (मलाकी 2:14-16)। एक दम्पत्ति को ऐसी एकता में बांधा जाता है कि किसी दूसरे साथी को बदलने की बात भी पाप मानता है (मत्ती 19:9)। मारना-कूटना, शराब पीना, परस्पर विरोध करना तथा परित्याग दूसरा विवाह करने के पर्याप्त कारण नहीं हैं। प्रचार करने के पौलुस के आदेश को विश्वासपूर्वक मानने वाला व्यक्ति पवित्र शास्त्र की इच्छा के विरुद्ध विवाह की अनदेखी करने की निन्दा करेगा।

व्यभिचार में जीवन बिताने वाले दम्पत्ति को, बपतिस्मे से उनके पाप से शुद्ध करके पवित्र नहीं बनाया जा सकता। व्यभिचार के कारण त्यागे हुए से जो कोई भी विवाह करता है वह उसके साथ व्यभिचार करता है। इसमें बच्चे शामिल हैं या नहीं, विवाह की प्रतिज्ञाएं बपतिस्मे से पहले की गई हैं या नहीं, इनसे विवाह के बारे में परमेश्वर का नियम नहीं बदलता। परमेश्वर ने यह ठहराया है कि व्यभिचार करने वाला आग की झील में डालने के योग्य है (गलतियों 5:19, 21; प्रकाशितवाक्य 21:8)। परमेश्वर के लोग मनुष्य की इच्छा को पूरा करने के लिए परमेश्वर के वचन में तोड़-मरोड़ करने का साहस नहीं करते।

जोश

विवाह पर प्रभु के नियमों, उद्धार की योजना और शिक्षा की प्रत्येक बात में स्थिर रहने वाला प्रचारक यदि आलसी मसीहियों को जोश से काम करने में उत्साहित करने में असफल रहता है तो वचन का प्रचार करने की बात को पूरा नहीं कर सकता (1 कुरिन्थियों 15:58)। परमेश्वर के दास के लिए अरुचि को जीवंत बनाना, पेट की बीमारी को ठीक करना आवश्यक है जिससे गुनगुना मसीही यीशु को कष्ट देता है (प्रकाशितवाक्य 3:16)। जो भलाई करना जानता है परन्तु नहीं करता, उसके लिए यह पाप है (याकूब 4:17)। वास्तव में, जिनमें जोश है परन्तु ज्ञान का फल नहीं है उन लोगों को न्याय के दिन वैसा ही फल मिलेगा जैसा उन्हें जिन्हें ज्ञान तो है परन्तु जोश नहीं (लूका 12:47, 48)। ''हे सोने वाले जाग और मुर्दों में से जी उठ; तो मसीह की ज्योति तुझ पर चमकेगी'' (5:14)।

सारांश

पौलुस द्वारा तीमुथियुस को दी आज्ञा से बड़ी कोई चुनौती नहीं दी गई कि ''वचन का

प्रचार कर।'' परमेश्वर करे कि हम में से हर कोई (1) वचन पर विश्वास करे, (2) वचन की बात माने, और (3) वचन को फैलाए!

पाद टिप्पणियां

[1]विशेषकर ऐसा तब है यदि कोई नीरो की सुन्दर पत्नी को पौलुस द्वारा मसीह में परिवर्तित करने के क्रिसोस्टॉम के वर्णन को मानता हो।''उसके (उसकी पत्नी) अपवित्र समझौते को बहाल करने के इन्कार करने से क्रोधित तानाशाह का क्रोध इस प्रेरित पर भड़क उठा और उसने उसे मृत्यु दण्ड दे दिया'' (डेविड स्मिथ, द लाइफ़ एण्ड लैटर्ज़ ऑफ़ सेंट पॉल [न्यूयॉर्क: हार्पर एण्ड ब्रदर्ज़, n.d.], 639)। [2]अंग्रेज़ी में छपे रेड लैटर एडिशन्स (अर्थात लाल अक्षरों वाली बाइबलें) यह प्रभाव छोड़ते हैं कि ''लाल अक्षरों में दिए गए शब्द मसीह के हैं,'' जबकि बाइबल का *प्रत्येक* शब्द मसीह द्वारा दिया गया है। [3]यह 1568 में फलेण्डर्स में डाउआय कॉलेज में ऑक्सफॉर्ड विद्वानों की एक टीम द्वारा तैयार किए गए कैथलिक अनुवाद, Douai version का भाव है। [4]इस पुस्तक में 32-34, से 37-44, और 99 पृष्ठों पर कई विशेष भविष्यवाणियों पर विचार किया गया है। [5]यह विचार *मॅक्गार्वेस सरमन्ज़* (डिलाइट, आर्क.: गॉस्पल लाइट पब्लिशिंग कं., 1975), 97–98 में जे. डब्ल्यू. मॅक्गार्वे, ''रिपेन्टेन्स'' में स्पष्ट है।